



# रुपयों के साथ रोग भी कमाता मानव ...!!

एक व्यक्ति से पूछा गया: 'दुनिया में मुफ्त में मिलने वाली कौन सी चीज़ है?' उसका उत्तर था : 'फोकट में तो कुछ भी नहीं मिलता... पर थोड़ा हिचकिचाहट के बाद उसने फिर से उत्तर दिया, हाँ, प्राण वायु तो फोकट में ही मिलती है...पर सुबह उठ नहीं पाता, वो जो बहुत ज़रूरी है जीवन के लिए, वो मैं ले नहीं पाता। पर करें क्या, सुबह उठने की सोचता तो हूँ, पर शाम को देर से सोने की जो आदत हो गई है, वो मेरे इस विचार पर भारी पड़ती है, तो इस कारण इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना बड़ा मुश्किल सा लगता है।' पर ऐसा क्यों? तो आइये हम देखें अपने आप को...। आज हम इसपर ही दृष्टिपात करेंगे...।

कुटुम्ब में, समाज में हाइलाइट होने जैसे लोग एक अलग ही प्रकार का रोग अपने अंदर ही अंदर पैदा करते रहते हैं...! और वो है अनिद्रा, हाई ब्लडप्रेसर, अस्त-व्यस्तता...! साथ ही बोनस में गुस्सा, चिड़चिड़ापन भी! अपने पूर्व पीढ़ी के लोग शक्ति, भक्ति के प्रमाण में रुपया कमाते थे, लेकिन रोग नहीं कमाते थे, जबकि आज के लोग रुपये के साथ रोग

को फूलगुलाबी न बनायें, तो फिर बची हुई सम्पत्ति क्या काम की...! जहाँ शरीर के सारे अंग ही शिथिल हो जाएं, वहाँ फिर आनंद काहे का!

इस प्रसिद्धि पाने की होड़ में आज का मनुष्य तंदुरुस्ती को भी दांव पर लगा रहा होता है। आगे जैसे हमने कहा, ऐसे जमा और गुणा करने में तंदुरुस्ती को घटा (दरकिनार) रहा होता है आज का

**मनुष्य रुपयों को नचाये वही सही, रुपया मनुष्य को नचाये, तो ये एक प्रकार की गुलामी ही होगी ना! सारी ज़िन्दगी**

**तंदुरुस्ती के आड़ में इकट्ठे किये रुपये, ये तंदुरुस्ती को दुरुस्त करने में खर्चा**

**करते हुए भी कम पड़ें तो रुपया कमाया, उसका मूल्य क्या...! याद रखने जैसा यही है कि सीधे और सरल रास्ते से कमाया हुआ रुपया ही सुख देता है।**



इस दुनिया में जीने के लिए प्राण वायु के सिवाय तमाम वस्तुओं के लिए रुपया खर्चना पड़ता है, सिर्फ ऑक्सीजन पर ही जीवन तो नहीं चलता ना...!

शरीर को चलाने के लिए खुराक की भी ज़रूरत पड़ती है, और इस खुराक के लिए रुपयों को कमाना पड़ता है। सारी दुनिया में लोग सुबह होते ही अपनी अपनी क्षमता अनुसार रुपयों को कैसे कमायें, इस शोध में निकल पड़ते हैं। क्योंकि सबको मालूम है कि रुपयों के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। कदम कदम पर कितना हुआ, कितना देना है, इसकी क्या कीमत है, कितना लेंगे आदि आदि रोज़ उपयोग में आते वाक्य बन गये हैं।

ये रुपया ही तो मनुष्य को प्रवृत्तिमय रखता है। जिसके पास रुपया नहीं, ऐसे लोग या तो सीमित हैं, या ऐसे लोगों को कुछ करने के पहले हजार बार विचार करना पड़ता है। फिर भी रुपया जीवन जीने के लिए शरीर में रहती गहरी नस के समान है।

आज के परिदृश्य में समाज को देखें तो एक वर्ग ऐसा है जो रुपयों के दबाव में ही जीता है। रुपयों का उनपर इतना दबाव है कि वो रात में नींद भी नहीं ले सकता। जिसे वो प्रतिस्पर्धी मानता है, या तो

भी समानांतर में कमाते हों, ऐसा लगता है, और वो ये है ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, डिप्रेशन, बेचैनी, असुरक्षा, हताशा, निराशा जैसे रोग। मैं उससे आगे निकल जाऊँ, या तो उच्च कैटेगरी में आने की होड़ में चिंतित रहता है। रुपया कमाना, ये कोई गलत या असत्य तो नहीं, लेकिन रुपये का रुहाब अपने ऊपर चढ़ बैठे, तो फिर जीने का मज़ा ही क्या...!

आप ध्यान से देखेंगे तो मालूम पड़ेगा कि आज का मनुष्य रुपयों के साथ रोग भी कमाता हुआ दिखाई देता है। 'हेल्थ इज़ वेल्थ' को हम मानने वाले, यदि हेल्थ

जिसने अपनी तंदुरुस्ती के बदले सिर्फ रुपयों को ही सर्वस्व माना...! अरे, कितने रुपये चाहिए मनुष्य को जीवन जीने के लिए...? पचास लाख, पाँच करोड़, दस करोड़ या पचास करोड़? या और इससे ज़्यादा?

किस काम के लिए आज का मनुष्य इतना खो गया है इन रुपयों के पीछे? पैसा तो हाथ का मैल है, वो तो आज है कल नहीं, पैसे तो गणिकाएं भी कमाती हैं, यहाँ का यहीं रह जाना है...। ऐसा सबकुछ बोलने वाला और समझदार मनुष्य कैसे और किस तरह रुपये को इतना हावी होने देना है अपने ऊपर...! ज़िन्दगी जीने की भी समझ होनी चाहिए।

मनुष्य रुपयों को नचाये वही सही, रुपया मनुष्य को नचाये, तो ये एक प्रकार की गुलामी ही होगी ना! सारी ज़िन्दगी तंदुरुस्ती के आड़ में इकट्ठे किये रुपये, ये तंदुरुस्ती को दुरुस्त करने में खर्च करते हुए भी कम पड़ें तो रुपया कमाया, उसका मूल्य क्या...? याद रखने जैसा यही है कि सीधे और सरल रास्ते से कमाया हुआ रुपया ही सुख देता है।

ये पढ़ते हुए आपको ऐसा लगे कि मैं भी इसी कैटेगरी में हूँ, तो सावधान हो जाइये। अन्यथा तो वही होगा जो ज़िन्दगी भर इकट्ठे किये हुए रुपये ही कम पड़ जायेंगे अपने सुस्वास्थ्य को पाने के लिए। हम तो आपको यही शुभ राय देंगे कि जीवन को स्वस्थ रखने के लिए ज्ञान और ध्यान को जीवन का हिस्सा बनायें। तभी तो पता चलेगा ज़िन्दगी का महत्व और जीने का अंदाज़।



**जगन्नाथ पुरी-ओडिशा।** ज्ञानचर्चा के पश्चात् मृदुल पाठक, सी.सी.एफ. एंड फोल्ड डायरेक्टर, टाइगर रिजर्व, म.प्र. को पुरिटी मैगज़ीन भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. निरूपमा।



**अबोहर-पंजाब।** मातेश्वरी जगदम्बा की 53वीं पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. पुष्पलता, ब्र.कु. दर्शना, लेखक परिषद अध्यक्ष राज सदोष, डॉ. संजय गुप्ता, डॉ. केवल कृष्ण, सेवानिवृत्त उपमंडल इंजीनियर सीता राम बजाज, एडवोकेट रमेश शर्मा तथा अन्य।



**समस्तीपुर-बिहार।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं डी.एम. चन्द्रशेखर सिंह, एस.डी.ओ. अशोक कुमार मण्डल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, डी.आर.एम. आर.के. जैन तथा ब्र.कु. कृष्ण।



**गाज़ियाबाद-मोहन नगर।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ए.एल.टी.टी.सी.बी.एस.एन.एल. में आयोजित 'हेप्पी हेल्दी लाइफ बाई राजयोग' कार्यक्रम में उपस्थित हैं सी.जी.एम. एम.के. सेठ, डी.जी.एम. सुभाष, ब्र.कु. डॉ. ऊषाकिरण तथा ब्र.कु. लवली।



**खारदाह से.7-कोलकाता।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. रंजीता तथा अन्य बहनों। कार्यक्रम में शरीक हुए वार्ड काउन्सलर आर.पी. हल्दर, पंचायत प्रधान तथा शहर के अन्य विशिष्ट लोग।



**दिल्ली-मजलिस पार्क।** 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' में बच्चों के साथ समूह चित्र में निगम पार्षद नवीन त्यागी, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. राजकुमारी तथा अन्य।



**हरदुआगंज-उ.प्र.।** सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् पुलिस अधिकारी अलका व गीता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. शिवा, ब्र.कु. सत्य प्रकाश तथा अन्य।



**सिवान-बिहार।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. रिन्की, ब्र.कु. गायत्री तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनों।